CLASS → 9 | गुप्त साम्राज्य और चालुक्य साम्राज्य/राजवंश *

गुप्त साम्राज्य (Guptas) :→ [310 ई. — 540 ई. तक]

→ संस्थापक → गुप्ता (श्रीगुप्त) —बेटा→ घटोत्चकम

→ इस गुप्त साम्राज्य का शासन उत्तर भारत (Northern India) में था। यानि जो वर्तमान में उ० प्र०, बिहार वाला क्षेत्र है वहाँ पर था।

→ जो विदेशी आक्रमण हुए थे → शकों के, इण्डो ग्रीक का, कुषाण का शासन इन सबका शासन धीरे-धीरे कम (जोर) होने लगा था जो गंगा और यमुना वाला दोआब क्षेत्र है वहीं गुप्ताज उभर (Emerge) हो रहे थे।

↳ दो नदियों के बीच की भूमि/क्षेत्र

चंद्रगुप्त-प्रथम (319 ई. से 334 ई. तक) :→

→ वास्तविक संस्थापक → चंद्रगुप्त प्रथम

→ (Imp.) उपाधि (title) लिया था → 'महाराजाधिराज' का

→ शादी की थी → 'कुमारदेवी' से → (लिच्छवी राजकुमारी)
- लिच्छवी → (महाजनपद)
- → क्षत्रिय थे।

Note:- गुप्ताज वैश्य थे (व्यापार करने वाले)

→ गुप्त संवत (Gupta Era) शुरू हुआ → "320 ई. में" / '319' ई. में

→ सोने के सिक्के चलवाए जिनको दिनार कहते है।

- सबसे पहले इण्डो ग्रीक ने सोने के सिक्कों को Introduce किया भारत में।
- सबसे purest form of gold coins लाया था → कुषाण के शासक कनिष्क
- लेकिन सबसे ज्यादा Number of gold coins आते है → गुप्त साम्राज्य के समय पर

समुद्रगुप्त (335-380 ई. तक) ÷

- चंद्रगुप्त प्रथम के बेटे थे।
- गुप्त साम्राज्य के **सबसे शक्तिशाली शासक** माने जाते हैं।

Note ÷ ऐसा नही है कि इनके समय पर गुप्त साम्राज्य maximum territorial Area में फैला हुआ था लेकिन Maximum territorial Area को कब्जा करने में हाथ इन्ही का था।

- इनके शासन काल के रिकार्ड → प्रयाग प्रशस्ति / इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख में (Allahabad Pillar Inscription) हमें मिलते हैं (दूसरा नाम)
  - → Never Defeated
  - प्रशस्ति → उस शासक का कवि अपने शासक की प्रशंसा में लिखी गई पंक्तियाँ (Inscription)
- प्रयाग प्रशस्ति को इनके दरबारी कवि → 'हरिषेण' ने लिखा है। जिसमें इन्होने वर्णित किया है कि समुद्रगुप्त आज तक एक युद्ध तक नही हारे।
- इसीलिए इनको भारत का नेपोलियन कहा जाता है।
  - → VA Smith ने कहा था / उपाधि दी थी।

Q → इनको नेपोलियन ऑफ इंडिया क्यो बोला गया अशोक को क्यो नही ?

A → क्योंकि अशोक ने सिर्फ एक ही युद्ध लड़ा था → कलिंग का युद्ध (261 ईसा पूर्व में) इन्होने जो 13 या 14 युद्ध लडे उनमें से एक भी नही हारे। जैसे नेपोलियन एक भी नही हारा था।

- उपाधि (titles) → कविराज, परम भागवत, सर्व-राज-ओद्दृत
  - कविराज (King of poets)
  - सर्व-राज-ओद्दृत मतलब → सभी राजाओ को हराने वाला (Uprooter of all kings)
- सिक्कों पर इन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
- इन्होने अश्वमेध यज्ञ किया।

PARMAR SSC

चंद्रगुप्त द्वितीय (II) [380ई॰ – 415ई॰ तक] ÷

→ समुद्रगुप्त के बेटे है

- रामगुप्त (भाई) → कॉपर (तांबा) के सिक्को को सबसे पहले introduce करने वाला शासक
- रामगुप्त की पत्नी → ध्रुवदेवी
- शक आक्रमणकर्ता (Saka Invader)

इन चारो को कहानी से आइए जानते है।

→ शकों ने फिर से आक्रमण किया चंद्रगुप्त द्वितीय के time पर। हरा दिया चंद्रगुप्त II को।

→ हराने के बाद साम्राज्य लेने और उसकी भाभी ध्रुवदेवी को भी लेने की बात कही।

→ ये बाद (बात) चंद्रगुप्त द्वितीय को पसंद न आई; इन्होने महिला का वेश में जाकर शाक आक्रमणकर्ता को मार दिया। तत्पश्चात अपने भाई रामगुप्त को भी मार दिया इस प्रकार गद्दी हासिल की और अपनी भाभी ध्रुवदेवी से शादी कर ली।

→ इनके शासनकाल के दौरान गुप्त साम्राज्य में उच्च स्तर का वैवाहिक गठबंधन देखा गया (उनकी बेटी प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक राजकुमार → 'रुद्रसेन द्वितीय' के साथ हुआ)

Southern most महाजनपद अस्सक में सातवाहन के बाद वाकाटक आए

→ High Watermark —का मतलब है→ कि सबसे बडा क्षेत्र Gupta Era के time पर इन्ही के time पर था (चंद्रगुप्त II के time पर)

→ चंद्रगुप्त द्वितीय के शासन के समय पर सबसे ज्यादा territory थी।

→ रुद्रसेन द्वितीय की मृत्यु हो जाती है शादी के तुरंत बाद।

→ अब प्रभावती गुप्ता (चंद्रगुप्त द्वितीय की बेटी) सिंहासन पर बैठी।

→ चंद्रगुप्त II ने अपनी बेटी को सहायता हेतु कुछ अधिकारियों को भेजा; अप्रत्यक्ष रुप से अब वाकाटक को चंद्रगुप्त गुप्त II (गुप्तराज) ही control कर रहे

PARMAR SSC

→ शकों पर विजय के बाद चाँदी के सिक्के जारी करने वाले प्रथम गुप्त शासक (Silver coins)

→ महरौली – लौह स्तम्भ शिलालेख इन्हीं से संबंधित है।
↓
दिल्ली (कुतुबमीनार के बगल में)

इसमें जंग इसीलिए नहीं लगती क्योंकि ये मिश्रधातु है pure लोहा नहीं है

→ इनके दरबार में नवरत्न थे।

① अमरसिंह
② धनवन्तरि
③ हरिषेण
④ कालिदास
⑤ कहापंहा
⑥ शंकु (Sanku)
⑦ वराहमिहिर
⑧ वररुचि
⑨ वेटलभट्ट (Vetabbhatta)

④ → शेक्सपियर ऑफ इंडिया (भारत का शेक्सपियर)

→ उपाधि ली → विक्रमादित्य की।

→ फा-हेन → प्रथम चीनी यात्री आया था इन्हीं के शासनकाल में।
↓
चीन के लिए वापस यात्रा की → बंगाल से [भारत से चीन के लिए]

कालिदास की पुस्तकें :-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम
- मालविकाग्निमित्र
- रघुवंशम
- मेघदूत
- कुमारसंभवम
- ऋतुसंहार

→ गुप्त साम्राज्य के ही समय पर एक पुस्तक लिखी गई → मृच्छकटिकम
↓
शूद्रक द्वारा लिखित
↓
The little clay cart के नाम से जाना जाता है।

- चारुदत्त और वसंतसेना के बीच → love story है (प्रेम कहानी)

PARMAR SSC

कुमारगुप्त प्रथम (415 ई. से 455 ई. तक) :-

- चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र
- हूणो का आक्रमण शुरू हुआ (यहाँ से)
- हूण = मध्य एशिया की जनजाति है (Central Asia)
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की।

स्कंदगुप्त प्रथम (455 ई. - 461 ई. तक) :-

- हूणो का सफलतापूर्वक विरोध किया यानि इनको निकालकर बाहर किया ; आक्रमण को खत्म कर दिया अभी के लिए।
- शीर्षक लिया → विक्रमादित्य का (स्रोत (जहाँ से पता लगा) → भीतरी स्तंभ शिलालेख (UP)

प्रशासन (Administration) ⇒ प्रशासन यहाँ पर किस तरह का था।

- साम्राज्य → भुक्ति (उपारिका के प्रभार के अंतर्गत) [राज्य]
  - जिलों में विभाजित
  - विशाया (विषय) [विषयपति के प्रभार में] [जिला]
    - विथिस [नगरपति के प्रभार में]
      - गांव [ग्रामिका के प्रभार के अन्तर्गत] [ग्राम]

विकेन्द्रीकृत प्रशासन Decentralized

महत्वपूर्ण अधिकारी :-

- कुमारमात्य → प्रांतीय अधिकारी
- महादंड नायक → दंड के लिए जिम्मेदार अधिकारी (न्यायाधीश महोदय)
- संधिविग्रहिका → युद्ध और न्याय का अधिकारी

PARMAR SSC

अर्थव्यवस्था :-

- बड़ी संख्या में सोने के सिक्के जारी किए।
- कर लगाते थे :- ① भाग → कृषकों द्वारा भुगतान कि जाने वाले उपज का 1/6 भाग
  ② भोग → राजा को फल, फूलो की आवधिक आपूर्ति (periodic supply of fruits, flowers to king)
  ③ बलि (वाली) → वैदिक age से शुरु हुआ अब oppressive था; नहीं दोगे तो दण्ड दिया जाएगा
  ④ उपरिकरा (Uparikara) → अतिरिक्त कर (extra tax)

विष्टि → बधुंवा मजदूरी forced labour

संस्कृति (Culture) :-

- (i) वराह की मूर्ति → महान सूअर
  - → विष्णु अवतार
  - → द्वारा निर्मित → चंद्रगुप्त द्वितीय के (उदयगिरि, ओडिशा में)
  - → ये पृथ्वी देवी (Goddess Earth) को protect कर रहे है अपनी tussel से।

दूसरा architecture

- ② दशावतार मंदिर :- झाँसी (उ.प्र.)
- ③ भीतरगांव मंदिर :- कानपुर, (उ.प्र.)
  - → कृष्णा को समर्पित है
  - → इसे सबसे पुराने ईंट मंदिर के रूप में भी जाना जाता है।

बंदरगाह (Port) :-

- ताम्रलिप्त → पूर्वी तट पर
- भड़ौच → पश्चिमी घाट पर

PARMAR SSC

गुप्तोत्तर काल (Post Gupt Empire)

PARMAR SSC

→ इसमें छोटे - छोटे वंशो को पढ़ना है।

* पुष्यभूति / वर्धन राजवंश :

→ संस्थापक → पुष्यभूति

→ थाणेश्वर, हरियाणा में

→ पुत्र → प्रभाकरवर्धन

पुत्र ↓ राज्यवर्धन (सबसे बड़ा)

पुत्र ↓ हर्षवर्धन (सबसे छोटा) (Most powerful ruler इस वंश का)

हर्षवर्धन — बहिन → राज्यश्री — पति — ग्रहवर्मा (कन्नौज पर शासन कर रहे थे)

→ देव गुप्ता ने ग्रहवर्मा को मार डाला
(मालवा वाले क्षेत्र में शासन कर रहे थे)

→ देवगुप्ता ने शशांक के साथ alliance भी बनाया।
शशांक → (उत्तर पश्चिम वाला बंगाल जिसे God province कहते है)

→ राज्यवर्धन ने देवगुप्त को मारा और शशांक ने राज्यवर्धन को मार डाला।

→ हर्षवर्धन ने अपनी बहिन राज्यश्री को आग में कूदने से बचाया।

Imp. हर्षवर्धन (606-647 ई तक)

→ राजधानी → कन्नौज

→ वल्लभी (गुजरात) शासक ध्रुवसेन को हराया था।

→ यात्री आया → ह्वेन - त्सांग (जुआंग - जैंग) → द्वितीय चीनी यात्री (1400 साल पहले आया था अब से)

PARMAR SSC

→ 2 सभाओं का आयोजन किया।

- ① कन्नौज सभा (Kannauj Assembly) ÷ ह्वेनसांग के सम्मान में
- ② प्रयाग सभा ÷ हर 5 साल में आयोजित (गंगा यमुना और सरस्वती के संगम पर)
  → कुंभ उत्पत्ति

→ हर्षवर्धन (हर्षवर्धन) शैव धर्म को मानने वाले थे।

→ बौद्ध धर्म का भी संरक्षण किया।

→ 3 पुस्तकें लिखी → ① रत्नावली
② नागनंदा
③ प्रियदर्शिका

→ जीवनी ÷ हर्षचरित — दरबारी कवि → बाणभट्ट ने लिखी है।

→ यह पुलकेशिन द्वितीय (चालुक्य राजा) से पराजित हुये।
(नर्मदा नदी के तट पर)

→ सकलोत्तरापथनाथा (Sakalottarapathanatha) (उत्तर भारत की भूमि) को दी गयी (चालुक्यों के अभिलेख में) शीर्षक (उपाधि) हर्षवर्धन

चालुक्य वंश ÷

→
- 3 जिला राजवंश :
- बादामी चालुक्य
- पश्चिमी चालुक्य
- पूर्वी चालुक्य

बादामी चालुक्य

→ प्रथम शासक ÷ (संस्थापक) → जयसिंह।

→ राजधानी → वातापी

PARMAR SSC

- सबसे शक्तिशाली शासक → पुलकेशिन प्रथम (543 - 566 ई.)

↓ पुत्र

कीर्तिवर्मन (मृत्यु)

↓

मंगलेश (भाई) ← पुत्र: पुलकेशिन द्वितीय (मार गए)

: पुलकेशिन द्वितीय : (610-642 ई.)

- अपने वंश में सबसे महान (शक्तिशाली)
- हर्षवर्धन को हराया। (ह्वेनसांग पुलकेशिन II के time पर भी आया था यानि इनके दरबार में)
- महेंद्रवर्मन प्रथम (पल्लव शासक) को हराया
  - → नरसिंहवर्मन प्रथम → इन्होंने पुलकेशिन II को हरा दिया।
  - → शीर्षक/उपाधि : वातापीकोंडा (वातापी का विजेता)

- विक्रमादित्य प्रथम ने कीर्तिवर्मन द्वितीय (प्रपौत्र) को हराया → राष्ट्रकूट

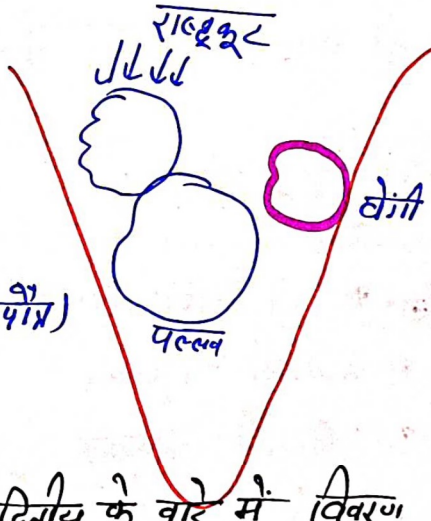

ऐहोल स्तंभ शिलालेख : पुलकेशिन द्वितीय के बारे में विवरण

↓

• रचित : रविकीर्ति (दरबारी कवि)

PARMAR SSC

चालुक्य वास्तुकला :

➡ शैली :→ वेसर शैली (नागर द्रविड़ शैली)

उत्तर भारत शैली : नागर
दक्षिण भारतीय शैली : द्रविड़

- रावण पहाड़ी गुफाएं, एहोल (Ravana phadi caves)
- लध खान मंदिर, ऐहोल (Ladh Khan temple)
- दुर्गा मंदिर : एक अपसाइडल विमान पर बना है।
- हुचिमल्लीगुडी मंदिर : ऐहोल मंदिर है।
- पत्तदकल मंदिर :
- यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल
- कुल : 10 मंदिर देखे गए

- विरुपाक्ष मंदिर : (द्रविड शैली)
- बंगमेश्वर मंदिर : (द्रविड शैली)

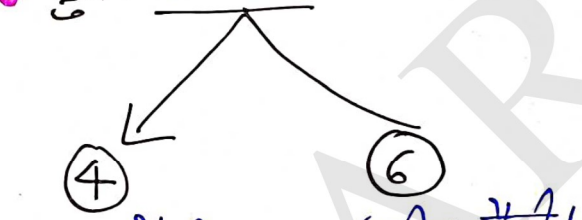

पल्लव वंश :

➡ संस्थापक → सिम्हा विष्णु

➡ महानतम शासक → महेंद्रवर्मन प्रथम
↓ बेटा
नरसिंहवर्मन प्रथम → वातापीकोंडा
(630ई-668ई) ↓ द्वारा हुआ

➡ राजधानी :→ कॉन्चीपुरम

वास्तुकला ÷

→ शोर मंदिर, महाबलिपुरम

राष्ट्रकूट वंश ÷ (753-982 ई. तक)

→ संस्थापक → दंतिदुर्ग

↓ पुत्र

कृष्णा आई → निर्मित ÷ एलोरा में कैलाश मंदिर

- केवल एक पत्थर से निर्मित
- अखण्ड पत्थर का मंदिर

↓

अमोघवर्ष (814-878 ई.)

राजधानी ÷ मान्यखेत

- उन्हे जैन धर्म में परिवर्तित कर दिया

PARMAR SSC